दिनाँक :- 23-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- बारह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की प्रगति (1900-1934) ई०

परिवारिक प्रथा मे परिवर्तन :- चीन में प्राचीन कबीली पारिवारिक प्रथा का विरोध किया जाने लगा। आवागमन के साधनों के विकास के फल स्वरूप अब लोग एक जगह से दूसरी जगह आने जाने लगे हैं। अब पैतृक परिवार या संयुक्त परिवार छोटी-छोटी इकाईयों में टूटने लगा। व्यक्तिगत परिवारों की संख्या बढ़ने लगी है। पश्चिम औद्योगिक व्यवस्था के कारण

Scanned with CamScanner

एक बड़ी संख्या में गाँवों को छोड़कर मजदूर शहरों की ओर आ गए। पैतृक घर से उनका संबंध टूट गया ईसाई धर्म प्रचारक पितृ-पूजा, रखैल प्रथा आदि की आलोचना करते थे। पश्चिमी ज्ञान विज्ञान से भी लोग प्रभावित थे पश्चिमी समाज स्कूल परिवार या निजी परिवार पर बल देता है। चीनी इससे भी प्रभावित हुआ पश्चिमी महिलाओं को उन्मुक्ति मिली। लड़कियों के लिए स्कूल खोले गए। मंचू शासक लड़कियों को शिक्षा दीक्षा का कोई प्रबंध नहीं था। कुछ मिशन स्कूलों में लड़कियों को शिक्षा दी जाने लगी थी। 1911 ई० के बाद उनके लिए प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा का प्रबंध किया गया। कुछ लड़कियाँ पढ़ने के लिए विदेश भी जाने लगी। 1880 ई० के दशक में कुछ लड़कियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका गई। 1911 ई० तक यह दो

सौ से अधिक चीनी छात्राएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही थी। अब वे नौकरी-पेशा में भी आने लगी तथा डाक्टर, नर्स, इंजीनियर, प्राध्यापक बन गई। अब महिलाएँ घर की चारदीवारी तक ही सीमित नहीं रहने लगी। विवाह की उम्र में भी वृद्धि होने लगी। 1919 ई० के छात्र आन्दोलन में छात्राओं ने भी भाग लिया। चीनी जीवन में यह एक नयी पहल थी। इसके फलस्वरूप महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में सहशिक्षा शुरू हुई। प्राथमिक विद्यालयों में भी यह प्रयोग शुरू हुआ।

अमरीका से जो चीनी छात्र अध्ययन करके स्वदेश लौटते थे उनमें सामाजिक सुधार की प्रबल चाह रहती थी। वे विवाह प्रथा में आवश्यक सुधार लाना चाहते थे। वे अपनी भावी पत्नियों का चयन स्वयं करना चाहते थे। महिलाएँ भी अपने मनोनुकूल पुरुषों से ब्याह करना चाहती थी। फलतः शादी-ब्याह में माँ-बाप का कोई हाथ नहीं रह गया।

Scanned with CamScanner

नवंदपति माँ-बाप के साथ भी यही रहने लगा। विवाहो

त्सव से मुक्ति मिल गई तथा प्रेम विवाह का पर

वाना चढ़ गया। यह सब शिक्षा का प्रभाव था। यद्यपि

शिक्षा का यह उद्देश्य नहीं था।

प्राचीन चीनी समाज में प्रजनन आवश्यक माना जाता

था क्योंकि संतान ही पैतृक कर्मकांडो का संपादन करती

थी किंतु अब यह मान्यता टूटने लगी। युद्धोत्तर चीन

में परिवार नियोजन पर बल दिया गया। विदेशियो में

शिक्षित चीनी युवा वर्ग पंसरा कुत्सित सामाजिक

प्रथाओं का विरुद्ध करने लगा। शहरो तथा नगरो में

रहने वाले चीनी नवयुक्त भी उनका अनुसरण करने

लगे। किंतु दूर-दराज में रहने वाले चीनी अभी भी

प्राचीन परंपराओ से चिपके हुये थे।

(ख) धार्मिक प्रज्ञापनवाद :- धर्म भी अलोचना के

दायरे में आ गया। ईसाई धर्म प्रचारकों को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा। उन्हें पश्चिमी साम्राज्यवाद का एजेंट कहा गया। ईसाई धर्म के साथ साथ, बौद्ध, ताओ एवं कन्फ्यूशियस संप्रदाय की भी आलोचना की जाने लगी। कन्फ्यूशियस संप्रदाय की पूजा पद्धति की आलोचना की गई। किंतु इस संप्रदाय के मूलोच्छेदन के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। कन्फ्यूशियस से संबंधित सारे कर्मकांडों का पालन जारी रहा। यह काम अधिकारी तथा कन्फ्यूशियस समाज करते थे। अनेक सरकारी स्कूलों में भी उसके प्रति सम्मान प्रकट किया। फलतः आम जनता कन्फ्यूशियस की पूजा करती रही। गणतंत्र सरकार इससे छुटकारा पाना चाहती थी। ताओ संप्रदाय में जादू-टोना, चमत्कार, जादूगरी की बोलबाला था।

इसके पुरोहित जड़वादी थे जो तरह-तरह की जादूगरी करते थे। वे आम लोगों के साथ-साथ बुद्धिजीवियों को भी अपने मायाजाल में फंसा लेते थे।

किंतु पश्चिमी शिक्षा से प्रभावित चीनियों ने धार्मिक अंधविश्वासों, जादू-टोना आदि का विरोध करना शुरू किया। मंदिरों को निर्माण की अनेक मूर्तियाँ तोड़ डाली गई या उन्हे अज्ञात स्थानों में रख दी गई। मंदिर में पश्चिमी शिक्षा दी जाने लगी। आयुर्विज्ञान गगनचुंबी इमारतों का निर्माण, रेलमार्गों का निर्माण, मशीनों के इस्तेमालों से अंधविश्वास दूर होने लगा।

ईसा की पहली शताब्दी के पूर्व चीन में बौद्ध पूर्व चीन में महायान संप्रदाय का आगमन हुआ। परमसत्ता पर विश्वास करता है तथा इसका उपद्देश्य मोक्ष है। किंतु ढाई सौ वर्षों तक महायान संप्रदाय का कोई

चीन बौद्ध भिक्षु नहीं बना किंतु सब निषिद्ध दूर हुआ तो इसका प्रचार-प्रसार तेजी से होने लगा। पर आम लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो गया। किंतु, चीन के बुद्धिजीवी इससे दूर रहे। बौद्ध भिक्षु आमतौर से अंधविश्वासी और अज्ञानी होते थे वे बुद्ध के उपदेशों को समझने में असमर्थ थे। फिर भी बौद्ध धर्म ने चीन को प्रभावित किया। युद्धोत्तर चीन में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान हुआ। इसका दार्शनिक पक्ष उजागर हुआ। बौद्ध धर्म प्रचार कर निकल पड़े तथा वे ईसाई धर्म प्रचारकों का सामना करने लगे। युवाओं बौद्ध समाज (Young Men's Buddhist Societies) निकल आए तथा सामाजिक कृत्यों की शुरुआत किया।

अनेक कारणों से ईसाई धर्म की भी आलोचना की जाने लगी। राष्ट्रवादियों ने इसे विदेशी प्रभाव कहा। धर्म प्रचारकों को विदेशियों का संरक्षण मिलता था तथा उन पर विदेशियों का ही नियंत्रण था।

Scanned with CamScanner